इकाई 2 सुबन्धु, बाण, दण्डी, अम्बिकादत्त व्यास

2.0 उद्देश्य

2.1 प्रस्तावना

2.2 सुबन्धु

- 2.2.1 जीवनवृत्त
- 2.2.2 समय
- 2.2.3 रचनाएँ
- 2.2.4 शैली

2.3 बाणभट्ट

- 2.3.1 जीवनवृत्त
- 2.3.2 समय
- 2.3.3 रचनाएँ
- 2.3.4 शैली

2.4 दण्डी

- 2.4.1 जीवनवृत्त
- 2.4.2 समय
- 2.4.3 रचनाएँ
- 2.4.4 शैली

2.5 अम्बिकादत्त व्यास

- 2.5.1 जीवनवृत्त
- 2.5.2 समय
- 2.5.3 रचनाएँ
- 2.5.4 शैली

2.6 सारांश

2.7 शब्दावली

2.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

2.9 बोध/अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

2.0 उद्देश्य

- इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् छात्र गद्य साहित्य से परिचित हो सकेंगे।
- संस्कृत गद्य साहित्य के इतिहास को जान पाएँगे।
- संस्कृत गद्य के प्रमुख गद्यकारों का जीवन परिचय एवं काव्य विधा गद्यशैली से परिचित होंगे।
- गद्य-साहित्य को समझ एवं उसकी लेखनशैली से परिचित होंगे।
- इनको पढ़ने के उपरान्त अन्य ग्रन्थों को स्वयं पढ़ एवं समझ सकेंगे।

2.1 प्रस्तावना

इस खण्ड की इकाई-2 में गद्य साहित्य के प्रमुख गद्यकारों के जीवन परिचय, उनका कालखण्ड एवं उनके प्रमुख ग्रन्थों का परिचय प्रस्तुत किया गया है। संस्कृत साहित्य के श्रव्यकाव्य की दो विधाएँ हैं - गद्य एवं पद्य। गद्य छन्द के बिना पदसमूह को गुंथित करने की कला का नाम है। वैदिक काल से गद्य रचना की परम्परा रही है। लौकिक साहित्य में हमें दण्डी, सुबन्धु, बाण आदि विभूतियों की कृतियों से इसके श्रेष्ठतम रूप का पता चलता है। गद्य को काव्यरचना की कसौटी कहा गया है। इन गद्यकारों की रचना पढ़ने से छात्र इस उक्ति को स्वीकार भी करेंगे। इनकी रचना हमें इनकी विद्वता से परिचित कराएगी। इस प्रकार छात्र इनको पढ़ने के उपरान्त इनकी मूल कृतियों को पढ़ने के लिए प्रेरित होंगे।

2.2 सुबन्धु

2.2.1 जीवनवृत्त

संस्कृत वाङ्मय के अलंकृत शैली में निबद्ध गद्यात्मक कृतियों में वासवदत्ता एक अद्वितीय ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ के रचनाकार सुबन्धु है। सुबन्धु वक्रोक्ति-मार्ग के लब्ध प्रतिष्ठ कवि हैं। संस्कृत साहित्य के अन्य कवियों की भाँति सुबन्धु का जीवनवृत्त भी अज्ञात है। वासवदत्ता एक गद्य काव्य का ग्रन्थ है। सुबन्धु के माता-पिता एवं वंश के बारे में जानने के लिए हमारे पास कोई साधन नहीं है। कुछ लोग इन्हें काश्मीरी मानते हैं तो कुछ लोग मध्यदेशीय। संस्कृत गद्यकाव्य रचयिताओं में

सुबन्धु, बाणभट्ट और दण्डी ये तीन प्रमुख कवियों के नाम सर्वप्रथम आते हैं सुबन्धु, बाणभट्ट एवं दण्डी। परन्तु इन तीनों कवियों के पौर्वापर्य के विषय में पर्याप्त मतभेद है। प्रो. सिल्वाँ लेवी, डॉ. कीथ, प्रो. तैलंग आदि अनेक भारतीय एवं पाश्चात्य विद्वानों ने सुबन्धु की स्थितिकाल पर पर्याप्त विचार किया है और सुबन्धु को बाण से पूर्ववर्ती माना है और इनका क्रम इस प्रकार है - सुबन्धु, बाणभट्ट एवं दण्डी।

2.2.2 समय

यद्यपि ऐतिहासिक साक्ष्यों के अभाव में यथार्थ निरूपण करना अत्यन्त ही दुष्कर कार्य है। तथापि विभिन्न अन्तः एवं बाह्य साक्ष्यों के आधार पर सुबन्धु की समय सीमा छठी शताब्दी का अन्त एवं सातवीं शताब्दी का प्रारम्भ माना है। विभिन्न कवियों एवं लेखकों द्वारा सुबन्धु के नाम को अपने-अपने ग्रन्थ में उद्धृत करना इस समयसीमा को सिद्ध करने में सहायक का कार्य करती है।

बाणभट्ट द्वारा सुबन्धु की प्रशंसा किया जाना भी सुबन्धु को बाणभट्ट से पूर्व का सिद्ध करता है। स्वयं बाणभट्ट ने हर्षचरित में 'वासवदत्ता' नामक ग्रन्थ को कवियों का दर्प नष्ट करने वाला ग्रन्थ माना है -

कवीनाममगलद् दर्पो नूनं वासवदत्तया।
शक्त्येव पाण्डुपुत्राणां गत्या कर्णगोचरताम्।। **हर्षचरित 1/12**

कादम्बरी नामक ग्रन्थ में बाणभट्ट ने अपने ग्रन्थ से पूर्व लिखे गए दो प्रसिद्ध कथाग्रन्थों का उल्लेख किया है जिसे कादम्बरी के टीकाकार भानुचन्द्र सिद्धचन्द्र ने 'अतिद्वयी कथा' पद से गुणाढ्य की बृहत्कथा और सुबन्धु की 'वासवदत्ता' अर्थ लिया है -

अलब्ध्यवैदग्ध्य विलासमुग्धया,
धिया निबद्धेयमति द्वयी कथा।

इसी प्रकार 'श्रीकण्ठचरित' के रचयिता कवि मंख जिनका समय लगभग 1150 ई. है, अपने ग्रन्थ में सुबन्धु एवं बाण की प्रशंसा करने में पहले सुबन्धु फिर बाण को उद्धृत करते हैं यह भी सुबन्धु को बाण से पूर्ववर्ती होना सिद्ध करता है -

मेण्ढे स्वर्द्विरदाधिरोहिणि वशं याते सुबन्धौ विधेः।
शान्ते हन्त च भारवौ विघटिते बाणे विषाद-स्पृशः।।

इन अन्तः एवं बाह्य साक्ष्यों के आधार पर सुबन्धु को बाणभट्ट से पूर्ववर्ती माना जाता है एवं उनका समय 600 ई. ही मानना सर्वथा समीचीन प्रतीत होता है।

2.2.3 रचनाएँ

सुबन्धु की एकमात्र रचना 'वासवदत्ता' प्राप्त होती है। यह युवक एवं युवती के प्रणयकथा पर आधारित है। वासवदत्ता की कथा पूर्णतः काल्पनिक है। इस ग्रन्थ में किसी प्रकार का विभाजन नहीं होने से इसे कथा की श्रेणी में रखा जाता है। इसकी कथा कुछ इस प्रकार है - राजा चिन्तामणि का कन्दर्पकेतु नामक पुत्र स्वप्न में एक अत्यन्त सुन्दरी बाला को देखकर मुग्ध हो जाता है। कामपीड़ित कन्दर्पकेतु अपने मित्र मकरन्द के साथ उस सुन्दरी की खोज में निकल पड़ता है। दोनों विन्ध्याटवी की तलहटी में पहुँचते हैं। वहाँ उन्हें शुक-सारिका की वार्त्ता से यह विदित होता है कि कुसुमपुर के श्रृंगारशेखर की सुन्दरी पुत्री वासवदत्ता ने राजा चिन्तामणि के पुत्र कन्दर्पकेतु को स्वप्न में देखा है और उस पर मोहित हो गई है तथा तमालिका नामक एक सारिका को कन्दर्पकेतु के भावों का पता लगाने के लिए भेजा है। कन्दर्पकेतु मकरन्द एवं तमालिका के साथ कुसुमपुर पहुँचता है। वासवदत्ता एवं कन्दर्पकेतु का मिलन होता है। कन्दर्पकेतु को जब यह पता चलता है कि वासवदत्ता की इच्छा के विरुद्ध उसका विवाह किसी विद्याधर के साथ किया जाने वाला है तो वह जादू के घोड़े पर वासवदत्ता को लेकर चला जाता है। विन्ध्याटवी में दोनों सो जाते हैं। कन्दर्पकेतु जागता है और वासवदत्ता को नहीं देखता है तो शरीर त्यागने हेतु समुद्र में उतरने लगता है। तभी आकाशवाणी उसे ऐसा करने से रोकती है। इतस्ततः भ्रमण करता हुआ कन्दर्पकेतु एक पत्थर की मूर्ति को छूता है तो वह मूर्ति वासवदत्ता के रूप में परिणत हो जाती है और वह बताती है कि मैं पहले जाग गई थी और थोड़ी दूर घूमने जाती है, वहाँ किरात के दो दलों में मेरे कारण संघर्ष हो जाता है। वे दोनों आश्रम को तहस-नहस कर देते हैं। आश्रम के ऋषि उसे इसका कारण मानकर श्राप देते हैं जिसका अवसान आपके स्पर्श से होना

था। मित्र मकरन्द भी वहाँ आ जाता है। सभी राजधानी लौटते हैं जहाँ सुखपूर्वक अपना जीवन व्यतीत करते हैं।

यह कथा पूर्णरूप से काल्पनिक है। यह लोककथा पर आधारित है। लोककथा की रूढ़ियों एवं अभिप्रायों का इसमें प्रयोग किया गया है।

2.2.4 शैली

सुबन्धु गौडी रीति के कवि हैं। इस रीति में ओजगुण की प्रमुखता होती है। लम्बे समासों का प्राचुर्य होता है। क्लिष्ट पदावली का प्रयोग होता है। कथा में चमत्कार लाने के कारण प्रत्येक पद में श्लेष का प्रयोग किया जाता है जो रचना की सहजता एवं प्रासादिकता को नष्ट कर उसे क्लिष्ट एवं जटिल बना देता है। सुबन्धु के वासवदत्ता में इसी प्रकार का वर्णन प्राप्त होता है।

सुबन्धु नाना प्रकार के विधाओं में नितान्त प्रवीण थे, जो उनके ग्रन्थ में प्रकृति वर्णन, स्त्री वर्णन, नगर वर्णन एवं संवाद आदि में स्पष्टतया दृष्टिगत होते हैं। इनकी लेखनी श्लेष रचना में विशेष रूप से दक्ष है। इन्होंने स्वयं अपने प्रबन्ध को "प्रत्यक्षर-श्लेषमयप्रपंचविन्यासवैदग्ध निधि" बनाने की बात कही है। कहीं-कहीं तो इनके श्लेष इतने कठिन हो जाते हैं कि कोश-ग्रन्थ की सहायता लेनी पड़ती है। सुबन्धु ने परिसंख्या, विरोधाभास, उत्प्रेक्षा, उपमा आदि नाना अलंकारों से वासवदत्ता को सज्जित किया है। कथा को छोड़कर विषयान्तर में बह जाने की कला में भी सुबन्धु प्रवीण है।

सुबन्धु की रचना का कला पक्ष उदार और हृदयावर्जक है। रचना में संगीतात्मकता है। एक तरफ सुबन्धु की रचना में क्लिष्ट पदावली है तो दूसरी ओर कोमलकान्त पदावली। कहीं श्लेष तो कहीं उपमा अलंकार एक ओर कठिन समस्तपद तो दूसरी ओर सरस पदावली। इन विरोधीगुणों के दर्शन सुबन्धु की वासवदत्ता में मणिकांचन संयोग की तरह प्रतीत होते हैं। बाणभट्ट ने वासवदत्ता की प्रशंसा यूँ ही नहीं की है -

"कवीनामगलदर्पो नूनं वासवदत्तया।
शक्त्येव पाण्डुपुत्राणां गतया कर्णगोचरम्।।"

2.3 बाणभट्ट

2.3.1 जीवनवृत्त

संस्कृत गद्य-साहित्य के प्रभावशाली गद्यकारों में बाण का नाम बड़े ही सम्मान के साथ लिया जाता है। बाणभट्ट को गद्यकाव्य के क्षेत्र में वही स्थान प्राप्त है जो कालिदास को नाटक एवं काव्य के क्षेत्र में प्राप्त है।

बाणभट्ट ने कादम्बरी के प्रारम्भिक श्लोकों में अपनी वंशावली का ज्ञान प्राप्त होता है और हर्षचरित में अपनी आत्मकथा वर्णित की है। बाण के प्रपितामह का नाम पाशुपत, पितामह का नाम अर्थपति, पिता का नाम चित्रभानु, माता का नाम राज्यदेवी और ग्राम का नाम प्रीतिकूट था। बाण के पुत्र का नाम भूषणभट्ट अथवा भूषणबाण था। कुछ विद्वान इनके पुत्र का नाम पुलिन्द अथवा पुलिन मानते हैं। बाण ने अपने पूर्वजों का उल्लेख उद्भट विद्वानों के रूप में की है। बाण के बाल्यकाल में ही उनकी माता का देहान्त हो गया था और जब बाण केवल 14 वर्ष के थे, तब उनके पिता का भी स्वर्गवास हो गया। बाल्यकाल में ही माता-पिता के स्वर्गवासी हो जाने पर बाणभट्ट के ऊपर किसी का अनुशासन नहीं रहा और अतुल सम्पत्ति के स्वामी होने के कारण इनके अनेक मित्र बन गए। युवावस्था की अविवेकी आयु में उन्होंने कई प्रकार के उच्छृंखल आचरण किए। स्वच्छन्द होकर अपने मित्रों के साथ देशाटन करने लगे। अनेक राजाओं, विद्वानों एवं विभिन्न प्रकार के व्यक्तियों के संसर्ग में रहकर लौकिक ज्ञान का अनुभव किया तथा विद्या प्राप्त करके अपने निवास वापस आ गए। इस देशभ्रमण से बाणभट्ट को पर्याप्त लाभ हुआ। उन्होंने अनेक गुरुकुलों में शिक्षा ग्रहण की, अनेक राज्यसभाओं को देखा, विभिन्न प्रकार के लोगों से अनुभव प्राप्त किया। इससे बाणभट्ट ज्ञानी, सूक्ष्मदर्शी, लोकानुभवी एवं बुद्धि-चातुर्य से युक्त व्यक्तित्व के स्वामी बन गए।

आरम्भ में बाणभट्ट कतिपय लोगों के द्वारा महाराज हर्षवर्धन के कान भर दिए जाने के कारण उनके कोपभाजक बन गए, परन्तु हर्षवर्धन के भाई श्रीकृष्ण के द्वारा हस्तक्षेप करने के उपरान्त बाणभट्ट को हर्षवर्धन के राजदरबार में प्रवेश प्राप्त हुआ। धीरे-धीरे अपने गुणों एवं कवित्व

शक्ति के कारण वे हर्ष के विश्वासपात्र एवं स्नेहभाजक बन गए। बहुत दिनों तक बाणभट्ट ने हर्षवर्धन के राजदरबार को सुशोभित किया। कालान्तर में बाणभट्ट अपने घर वापस लौट आए एवं मित्रजनों के अनुरोध पर श्रीहर्ष का जीवनचरित चित्रित किया।

2.3.2 समय

बाणभट्ट के समय के सम्बन्ध में विद्वानों में कोई मतभेद नहीं है। बाणभट्ट हर्षवर्धन के सभापण्डित थे। हर्षवर्धन का समय 606 ई. से 648 ई. तक है। धनंजय आनन्दवर्धन एवं वामनादि कई आचार्यों ने अपने ग्रन्थ में बाणभट्ट का उल्लेख किया है। वामन का समय 800 ई., आनन्दवर्धन का 850 ई. एवं धनंजय का समय 1000 ई. माना जाता है। रुय्यक जिनका समय 1150 ई. माना जाता है, ने अपने ग्रन्थ अलंकार-सर्वस्व में बाण के ग्रन्थ हर्षचरित का उल्लेख कई बार किया। हर्षचरित में बाणभट्ट ने राजा हर्ष के पराक्रमों एवं दानकर्मों का बड़ा ही रोचक वर्णन किया है। राजा हर्ष ने 643 ई. में अपना सम्पूर्ण वैभव-प्रयाग में दान कर दिया, उस अवसर पर चीनी यात्री ह्वेन्त्सांग उपस्थित था। इसने अपने भारत यात्रा (629-645 ई.) के संस्मरणों में श्री हर्ष का पूरा विवरण दिया है जिसने इस घटना का वर्णन अपने संस्करणों में किया है। इस प्रकार के अन्तः एवं बाह्य साक्ष्य यह सिद्ध करते हैं कि बाणभट्ट का समय सातवीं शताब्दी का उत्तरार्ध मानना गलत प्रतीत नहीं होता।

2.3.3 रचनाएँ

बाणभट्ट ने कई ग्रन्थों की रचना की, जिसमें से कुछ ही साहित्य प्रेमियों को प्राप्त हुई। जिसमें से हर्षचरित एवं कादम्बरी प्रमुख हैं। पार्वतीपरिणय, चण्डीशतकम् एवं मुकुटताडितक भी बाणभट्ट की रचना मानी जाती है। भोज ने अपने ग्रन्थ में इसका उल्लेख किया है। यह महाभारत पर आधारित था।

उपरोक्त ग्रन्थों में हर्षचरित आख्यायिका तथा कादम्बरी कथा ग्रन्थ है। चंडीशतकम् स्तोत्रकाव्य है।

हर्षचरित - हर्षचरित बाणभट्ट की प्रथम गद्य रचना है। इसका कथानक ऐतिहासिक है। हर्षचरित आख्यायिका है। इसमें 8 उच्छ्वास है। इस

ग्रन्थ के प्रथम तीन उच्छ्वासों में बाण ने आत्मकथा लिखी है। शेष पाँच उच्छ्वासों में हर्ष के चरित्र का वर्णन है। इस ग्रन्थ का नायक स्थाण्वीश्वर (थानेसर) के राजा हर्ष है। हर्ष के पिता का नाम प्रभाकरवर्धन एवं माता का नाम यशोदेवी था। हर्ष के एक बड़े भाई थे, जिसका नाम राज्यवर्धन था एवं एक छोटी बहन थी जिसका नाम राज्यश्री था। राज्यश्री का विवाह मौखरि राजकुमार गृहवर्मा के साथ हुआ था। राजवर्धन एवं हर्षवर्धन हूणों के विरुद्ध युद्ध के लिए जाते हैं। हर्ष मार्ग में पिता के रोगग्रस्त होने की सूचना पाते हैं और हर्ष पिता के पास वापस आ जाते हैं। प्रभाकरवर्धन जीवन की अन्तिम साँसे ले रहे हैं यह जानकर हर्ष की माता यशोवती अग्नि में जलकर सती हो जाती है। प्रभाकरवर्मन की भी मृत्यु हो जाती है। कुछ समय पश्चात् मालवराज गृहवर्मा का वध कर राज्यश्री को कैद कर लेता है। गौडराज छल से राजवर्धन का वध कर देता है। राज्यश्री विन्ध्याटवी में पहुँच जाती है। बहन की खोज में हर्षवर्धन भी विन्ध्याटवी पहुँच जाता है। राज्यश्री चिता में प्रवेश करने ही वाली होती है कि हर्षवर्धन पहुँच कर उसके प्राण बचा लेता है। हर्षवर्धन राज्यश्री को लेकर कटक आ जाता है। यहीं ग्रन्थ की समाप्ति हो जाती है।

कथानक को देखने से ऐसा प्रतीत होता है कि कथा अपूर्ण है, परन्तु कुछ विद्वानों का मानना है कि बाणभट्ट को यहीं तक हर्ष का चरित वर्णन अभीष्ट था।

हर्षचरित गद्यकाव्य के रूप में काव्यसौन्दर्य से परिपूर्ण ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ का अंगीरस वीर है। वीररस के साथ-साथ करुण रस का भी इस ग्रन्थ में बड़े ही सुन्दर ढंग से वर्णन किया गया है जो पाठक को मन्त्रमुग्ध कर देती है। अपनी वर्णनशैली के कारण हर्षचरित एक सुन्दर गद्यकाव्य है। सोठ्ठल ने हर्षचरित की प्रशंसा में यह युक्ति सही ही कही है-

बाणस्य हर्षचरिते निशितामुदीक्ष्य
शक्तिं न केऽत्र कवितास्त्रमदंत्यजन्ति।

कादम्बरी - कादम्बरी संस्कृत साहित्य की सर्वोत्कृष्ट गद्यकृति है। भाषा, भाव कथानक चरित्र-चित्रण, प्रकृति-वर्णन आदि विभिन्न दृष्टियों से कादम्बरी अनुपम गद्यकाव्य है। कादम्बरी वस्तुतः ऐसी स्वादिष्ट

एवं आकर्षक मदिरा है जिसके रस में आकण्ठ डुब कर सहृदय व्यक्ति को लौकिक भोगादि अति रुचिकर प्रतीत नहीं हो पाते -

"कादम्बरी रसाज्ञानामाहारोऽपि न रोचते।"

कादम्बरी बाणभट्ट की सर्वश्रेष्ठ रचना है। दुर्भाग्यवश यह बाणभट्ट द्वारा पूर्ण न की जा सकी। उनके पुत्र भूषणभट्ट या पुलिन्दभट्ट द्वारा इसे पूर्ण किया गया था।

कादम्बरी की कथा संक्षेप में कुछ इस प्रकार है - राजा शूद्रक के पास एक चाण्डाल कन्या आती है। वह शूद्रक को एक शुक भेंट करती है, जो अत्यधिक मेधा सम्पन्न है। शुक अपने जन्म से लेकर समस्त वृत्तान्त शूद्रक को बताता है। शुक जावालि के आश्रम में पहुँचने का वर्णन करता है। इसके बाद जावालि मुनि शुक से उसके अर्थात् शुक के पूर्व जन्म का वृत्तान्त कहते हैं। वह इस प्रकार है - तारापीड का पुत्र चन्द्रापीड अपने मित्र वैशम्पायन के साथ जब दिग्विजय के लिए निकलता है तो अच्छोद नामक सरोवर पर एक युवती तपस्विनी को देखता है। उसका नाम महाश्वेता है, जो गन्धर्व राजकन्या है। महाश्वेता अपनी तपस्या का कारण और अपने प्रेमी पुण्डरीक की मृत्यु आदि का वर्णन करती है। तत्पश्चात् महाश्वेता चन्द्रापीड को अपनी सखी गन्धर्वराजपुत्री कादम्बरी से मिलाने ले जाती है। कादम्बरी ने महाश्वेता के विवाह न करने के कारण स्वयं भी विवाह न करने का निश्चय किया था, किन्तु चन्द्रापीड को देखकर वह कामासक्त हो गयी और चन्द्रापीड भी उसके ऊपर अनुरक्त हो गया। इसी समय चन्द्रापीड को उज्जयिनी वापस लौटना पड़ता है। ताम्बूल-वाहिनी पत्रलेखा कादम्बरी के वास्तव प्रेम का संदेश लाती है और यहीं पूर्व कादम्बरी कथा समाप्त हो जाती है।

उत्तर भाग में चन्द्रापीड महाश्वेता के पास लौटता है और अपने प्रिय मित्र वैशम्पायन की विपत्ति का हाल जान लेता है जो महाश्वेता से प्रणय स्थापित करने का उद्योग करता है, परन्तु उसका कोपभाजन बन तोता बन जाता है। चन्द्रापीड अपने सुहृद की स्थिति से शोकाक्रान्त हो अपना शरीर त्याग देता है। यह समाचार सुन कादम्बरी आती है और विलाप करती है। चन्द्रापीड के माता-पिता विलासवती एवं तारापीड भी इस समाचार से अत्यन्त ही उद्विग्न हो जाते हैं।

कपिंजल अपने मित्र शुक जो वास्तव में वैशम्पायन है, को खोजने के लिए जाबालि के आश्रम में आता है और मित्र की इस अवस्था को देख दुखी होता है। शुक उड़कर एक चाण्डाल के पास चला जाता है जो उसे अपनी कन्या को देता है और वहीं चाण्डाल कन्या उसे शूद्रक के दरबार में लाती है। वह चाण्डाल कन्या वास्तव में पुण्डरीक की माता लक्ष्मी है तथा पुण्डरीक ही उस जन्म का वैशम्पायन है। राजा शूद्रक स्वयं पूर्व जन्म का चन्द्रापीड है, जो कभी स्वयं चन्द्रमा था और शापवश धरती पर आया था। लक्ष्मी अन्तर्ध्यान हो जाती है तथा शूद्रक और शुक का भी शरीरपात हो जाता है (अर्थात शरीर त्याग देते हैं)। चन्द्रापीड का मृतक शरीर पुनर्जीवित हो जाता है और पुण्डरीक भी आकाश से उतर आता है। अन्ततः पुण्डरीक से महाश्वेता एवं चन्द्रापीड से कादम्बरी का मिलन होता है और वे प्रणयीयुगल सुख से जीवन यापन करते हैं।

इस प्रकार कादम्बरी नामक ग्रन्थ में चन्द्रापीड एवं पुण्डरीक दोनों नायकों के तीन-तीन जन्मों की कहानी है।

कादम्बरी की कथा पूर्णतः कल्पनाप्रसूत है, अतः इसे मौलिक कहा जा सकता है, लेकिन इसे पढ़ने के उपरान्त ऐसा प्रतीत होता है जैसे इसकी प्रेरणा गुणाढ्य की बृहत्कथा के मकरन्दिकोपाख्यान में निहित है।

मुकुटताडितक - बाणभट्ट की एक और रचना मुकुटताडितक के बारे में जानकारी प्राप्त होती है। भोज के ग्रन्थ सरस्वती कण्ठाभरण में इसका उल्लेख प्राप्त होता है -

यादृग् गद्यविद्यौ बाणः पद्यबन्धेऽपि तादृशः।

अर्थात् गद्यलेखन में बाण का जितना चमत्कार दिखाई देता है उतना पद्य लेखन में भी। मुकुटताडितक नाटक महाभारत के कथानक पर आधारित है जिसमें भीम दुर्योधन को मारकर उसके मुकुट को फोड़ डालता है। नलचम्पू के टीकाकारों - चन्द्रपाल, गुणविजय गणि भी इसे बाणभट्ट की ही रचना मानते हैं। चूंकि आज यह ग्रन्थ उपलब्ध नहीं है इसलिए हम इस पर ज्यादा विचार नहीं कर सकते, परन्तु जब तक इस ग्रन्थ के सन्दर्भ में कोई अन्य जानकारी नहीं प्राप्त हो जाती तब तक इसे हम बाणभट्ट की अनुपलब्ध रचनाओं में ही गणना करेंगे।

2.4.4 शैली

बाणभट्ट मौलिकता के धनी, एक गद्यकार के रूप में संस्कृत साहित्य के अनमोल रत्न हैं। उनके पास शब्दों का ऐसा अक्षय-कोश है कि कितना भी लिखे खत्म ही नहीं होता कभी उनका शब्द-भण्डार रुकने का नाम ही नहीं लेता। उनकी इसी विशेषता के कारण उनके लिए यह उक्ति सर्वप्रसिद्ध है -

"बाणोच्छिष्टं जगत्सर्वम्"

आचार्य गोवर्धनाचार्य बाणभट्ट की वाणी को साक्षात् सरस्वती का अवतार मानते हैं। उनका कहना है कि जिस प्रकार अधिक प्रगल्भता प्राप्त करने से शिखण्डिनी शिखण्डनी बन गई उसी प्रकार पुरुष रूप में अधिक चमत्कार प्राप्त करने के लिए मानो सरस्वती बाण बन गई -

जाता शिखण्डिनी प्राग् यथा शिखण्डी तथाऽवगच्छामि।
प्रागल्भ्यमधिकमाप्तुं वाणी बाणो बभूवेति।।

ईसा की सातवीं शताब्दी संस्कृत साहित्य का चतुर्दिक विकास का युग कहा जा सकता है। सुबन्धु, बाण, दण्डी, माघ जैसे कई ऐसे साहित्यकार हुए जिन्होंने अपनी रचना से संस्कृत साहित्य को सुशोभित किया। दण्डी पद-लालित्य के लिए भवभूति करुण-रस के लिए सुबन्धु समस्तपदावली के लिए तो बाण अपनी कल्पनाशैली के लिए अमर हैं।

गद्य को कवियों की कसौटी कहा जाता है -

"गद्यं कवीनां निकषं वदन्ति"

गद्यलेखन में कवि को अपनी प्रतिभा एवं योग्यता को प्रकाशित करने का अवसर प्राप्त होता है। यहाँ छन्दोबद्धता नहीं होने से कवि को इसमें लालित्य उत्पन्न करने के लिए अलङ्कार, कल्पनाएँ, रोचक-वर्णन, आकर्षक-कथानक, रस आदि का सम्यक् योग करना पड़ता है। बाण के गद्य में ऐसे बहुत से गुण पाए जाते हैं जो इन्हें अन्यों से श्रेष्ठ सिद्ध करते हैं। बाणभट्ट के गद्य के दोनों विधा कथा एवं आख्यायिका का प्रणयन किया है। उनकी रीति पाञ्चाली है - शब्दार्थयोः समो गुम्फः पाञ्चालीरीतिरिप्यते। बाण के साहित्य में समास का प्रयोग है परन्तु वह

लालित्ययुक्त है। आधुनिक संस्कृत साहित्य के विद्वान् डॉ. कपिलदेव द्विवेदी ने भी बाण की भूरि-भूरि प्रशंसा की है। उन्होंने माना है कि बाणभट्ट में कालिदास की कोमल-कल्पना, वाल्मीकि का माधुर्य, व्यास के महाभारत का प्रासाद, दण्डी का पदलालित्य और सुबन्धु का ओजगुण है। बाण के काव्य के सौष्ठव एवं पूर्णता के कारण ही 'वाणोच्छिष्टं जगत् सर्वम्' यह सूक्ति प्रचलित है।

2.4 दण्डी

2.4.1 जीवनवृत्त

संस्कृत साहित्य में दण्डी का एक विशिष्ट स्थान है। ये गद्य साहित्य के आरम्भिक कवियों में अपना स्थान रखते हैं। संस्कृत के अन्य कवियों की भाँति ही दण्डी के बारे में भी हम कुछ स्पष्ट जानकारी नहीं प्राप्त कर पाते हैं। इनके जीवन परिचय एवं स्थितिकाल के विषय में भी पर्याप्त मतभेद है। दण्डी विरचित 'अवन्तिसुन्दरी-कथा' नामक ग्रन्थ से दण्डी के विषय में पर्याप्त जानकारी प्राप्त होती है, परन्तु बहुत से विद्वान इस ग्रन्थ को दण्डी की रचना नहीं मानते। परन्तु 'काव्यादर्श' नामक ग्रन्थ जिसकी रचना दण्डी ने की है, में 'अवन्तीसुन्दरी कथा' का उल्लेख प्राप्त होता है। राजशेखर के अनुसार दण्डी ने तीन गन्थों की रचना की - (1) दशकुमारचरित (2) काव्यादर्श एवं (3) अवन्तिसुन्दरीकथा।

अवन्तिसुन्दरी कथा के आधार पर दण्डी गुजरात के आनन्दपुर के निवासी थे, किन्तु बाद में एलिचपुर (नासिक में) बस गए। इनके पूर्वज नारायणस्वामी के दामोदर नामक पुत्र उत्पन्न हुआ। दामोदर का ही नाम भारवि था जो किरातार्जुनीयम् के रचयिता हैं। दामोदर के तीन पुत्र थे। उसमें मध्यम पुत्र मनोरथ के पुत्र वीरदत्त थे जो दण्डी के पिता थे, अर्थात् दण्डी वीरदत्त के पुत्र थे। दण्डी के माता-पिता का बाल्यकाल में ही स्वर्गवास हो गया था। कांचीनगर में विप्लव हो जाने से दण्डी नगर छोड़ वनों में भटकने लगे, पुनः पल्लवनरेश नरसिंह द्वारा कांची को जीत लेने परदण्डी नगर लौट आए और पल्लवनरेश की छत्रछाया में रहने लगे। पल्लवनरेश के पुत्रों को शिक्षित करने के उद्देश्य से काव्यादर्श की रचना की थी। एम. रंगाचार्य ने इस जनश्रुति का उल्लेख किया है। दण्डी

कौशिकगोत्रीय ब्राह्मण थे एवं प्रकाण्ड विद्वान थे। दशकुमारचरित इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है।

2.4.2 समय

'दशकुमारचित' के अनुशीलन से हम इस निष्कर्ष पर पहुँच सकते हैं कि दण्डी हर्षचरित में वर्णित भौगोलिक एवं राजनीतिक विवरण से पूर्व के हो सकते हैं। इस तथ्य के आधार पर विद्वान इन्हें बाण से पूर्ववर्ती मानते हैं।

कुछ और भी तथ्य हैं जो दण्डी के काल-निर्धारण में सहायक सिद्ध होती है - नवम सदी के रचित ग्रन्थों में दण्डी का उल्लेख प्राप्त होता है इसलिए हम इन्हें इससे पूर्व का ही मानते हैं। डॉ. बर्नेट के अनुसार, सिंहली भाषा के अलंकारग्रन्थ 'सिया वसलंकार' नामक रचना का आधार काव्यादर्श है। ऐसा जर्नल आफ द रायल एशियाटिक सोसाइटी 1905 ई. में वर्णित है। इस ग्रन्थ की रचना राजा सेन प्रथम ने की थी जिनका समय 846-866 ई. था। इसलिए दण्डी इसके बाद के नहीं हो सकते। उस ग्रन्थ में काव्यादर्श का नाम भी उल्लेखित हुआ है। वामन जिनका समय, 779-816 ई. है, ने मार्ग (style) के लिए 'रीति' शब्द का प्रयोग किया है, दण्डी ने अपने ग्रन्थ में रीति को मार्ग शब्द से अभिहित किया है, यह भी दण्डी को 8वीं सदी से पूर्व का सिद्ध करता है। सुबन्धु की 'वासवदत्ता' छठी शताब्दी की रचना है इसमें दण्डी के नाम का दो बार उल्लेख हुआ है -

छन्दोविचित्यां सकलस्तत्प्रपञ्चः प्रदर्शित।
छन्दोविचितिरिव कुसुमविचित्रा।
छन्दोविचितिरिव मालिनी सनाथा।।

डॉ. कीथ 'छन्दोवीचितिः...' का अर्थ छन्दःशास्त्र है अथवा काव्यादर्श में इस नाम का कोई परिच्छेद रहा होगा, ऐसा मानते हैं। इस उद्धरण को साक्ष्य मानकर दण्डी को सुबन्धु से पूर्ववर्ती सिद्ध किया जा सकता है।

उपर्युक्त सभी साक्ष्य दण्डी की सातवीं शताब्दी से पूर्व का सिद्ध करते हैं। एक और तथ्य भी हमें दण्डी का समय छठी शताब्दी सिद्ध करने के लिए सहायक बनती है वह है दशकुमारचरित में वर्णित समाज। इसमें जिस समाज का वर्णन है वह गुप्तराजाओं के काल की है, जो कि हर्षवर्धन

(606-648) से पूर्ववर्ती है। अतः हम कह सकते हैं कि दण्डी का समय 600 ई. के आसपास का है।

2.4.3 रचनाएँ

दशकुमारचरित - दशकुमार चरित का वर्तमान उपलब्ध स्वरूप तीन भागों में विभाजित है। प्रथम पाँच उच्छ्वासों की पूर्वपीठिका, आठ उच्छ्वासों का दशकुमारचरित एवं उपसंहार। कुछ विद्वान मध्य भाग को ही मूल दशकुमारचरित मानते हैं। जैसा कि ग्रन्थ के नाम से ही स्पष्ट है कि यह दश राजकुमारों की कथा है। कथा की पीठिका से ज्ञात होता है कि मगध के राजा राजहंस ने मालवनरेश मानसार से पराजित होकर अपनी रानी वसुमती के साथ विन्ध्य के वनों में आश्रय लेते हैं, वहीं वसुमती राजवाहन को जन्म देती है। राजा के विभिन्न मन्त्रियों के भी सात कुमार उत्पन्न होते हैं। राजा राजहंस के मित्र मिथिलानरेश प्रहारवर्मा के शबरों के साथ युद्ध में मारे जाने पर उनके दो पुत्र भी भाग्यवशात् उनके पास पहुँच जाते हैं। राजहंस के द्वारा इन सभी दसों कुमारों का पालन-पोषण किया जाता है। युवा होने पर दसों राजकुमार दिग्विजय अभियान पर निकल जाते हैं। अपने-अपने अभियान में वे सभी एक दूसरे से भाग्यवैषम्य के कारण बिछड़ गए और अलग-अलग स्थान पर पहुँच गए। कुछ वर्ष पश्चात् सभी कुमार एक-एक कर राजवाहन से मिलते गए और उन्हें अपनी आपबीती सुनायी। जिन दस कुमारों का वर्णन यहाँ प्राप्त होता है वे इस प्रकार हैं - राजवाहन, सोमदत्त, पुष्पोद्भव, अपहारवर्मा, उपहारवर्मा, अर्थपाल, प्रमति, मित्रगुप्त, मन्त्रगुप्त और विश्रुत। दशकुमारचरित के पूर्वपीठिका के तृतीय और चतुर्थ उच्छ्वासों में सोमदत्त एवं पुष्पोद्भव का वृत्तान्त वर्णित है, पंचम उच्छ्वास में राजवाहन का मालवनरेश मानसार की पुत्री अवन्तिसुन्दरी से प्रणय तथा परिणय वर्णित है। षष्ठ उच्छ्वास में मित्रगुप्त एवं सप्तम उच्छ्वास में मन्त्रगुप्त के अनुभव वर्णित हैं। अष्टम उच्छ्वास में विश्रुत का चरित वर्णित है। उत्तरपीठिका में सभी मिलकर राजवाहन के पिता राजहंस के पास आते हैं। वे इन कुमारों को उनके द्वारा जीते गए राज्यों का राजा बना कर स्वयं वानप्रस्थ ले लेते हैं। दण्डी का कथानक घटनाप्रधान है। कई रोमाञ्चक घटनाएँ पाठकों को विस्मय एवं विषाद से भर देती है। कहीं भयंकर जंगल तो कहीं समुद्र तो कहीं राजमहल का

भव्य वर्णन प्राप्त होता है। दण्डी ने इस ग्रन्थ में जिस समाज का वर्णन किया है वह अत्यन्त सामान्य जीवन है, जिसमें धूर्त्त, वेश्याएँ, जादूगर, चोर, तपस्वी, ब्राह्मण, साधु, सिंहासनच्युत राजा, पतिवञ्चक नारी सभी सजीव पात्र हैं। दशकुमार चरित एक अनूठी रचना है।

अवन्ती सुन्दरी कथा - दशकुमार चरित की पूर्वपीठिका में राजवाहन एवं अवन्तिसुन्दरी में प्रणय एवं परिणय की कथा वर्णित है इसी कथा का विस्तारपूर्वक निरूपण अवन्तिसुन्दरी में किया गया है। जिसका प्रकाशन दक्षिण भारती ग्रन्थमाला में 1924 ई. में श्री एस.आर. कवि के द्वारा सम्पादित किया गया। पुनः 1954 अनन्तशयन-संस्कृत-ग्रन्थावली में इसका पूरा रूप प्रकाशित हुआ। कुछ लोग इसे दण्डी के नाम से किसी और की रचना मानते हैं तो कुछ इसे पूर्व-पीठिका का भाग मानते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि कुछ अवन्तिसुन्दरी को अलग ग्रन्थ तो कुछ दशकुमार का भाग मानते हैं।

काव्यादर्श - अलङ्कार-शास्त्र के रूप में काव्यादर्श का बहुत ही महत्त्व है। दण्डी की तीनों रचनाओं में दशकुमारचरित के बाद काव्यादर्श ही प्राप्त होती है। इसका पहला संस्करण कलकत्ता से प्रेमचन्द्र तर्कवागीश की टीका के साथ प्रकाशित हुआ था। आज इसके कई संस्करण प्राप्त होते हैं। इसके प्रायः सभी संस्करणों में तीन परिच्छेद प्राप्त होते हैं, परन्तु रङ्गाचार्य वाले संस्करण में चार परिच्छेद हैं। इन्होंने तृतीय परिच्छेद के दोष-प्रकरण को पृथक् करके चतुर्थ परिच्छेद नाम दिया है। इस ग्रन्थ के कलकत्ता एवं पूना संस्करण में 660 श्लोक तथा मद्रास संस्करण में 663 श्लोक हैं। यह काव्यशास्त्र को समझने के लिए मार्गदर्शक का काम करती है। इसका वर्ण्य विषय इस प्रकार है -

प्रथम परिच्छेद - इस परिच्छेद में मंगलाचरण के उपरान्त काव्य की परिभाषा, उसके तीन भेद - गद्य, पद्य एवं मिश्र, कथा एवं आख्यायिका में भेद एवं समाहार, साहित्य का भाषागत भेद - संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश और मिश्र, बताये गए हैं। मार्ग (रीति) का वर्णन एवं भेद (वैदर्भी एवं गौडी), गुणभेद, अलङ्कार का वर्णन कवित्वप्रतिभा (अभ्यास, प्रतिभा एवं पठन) का भी वर्णन किया है एवं लक्षण बताए हैं।

द्वितीय परिच्छेद - द्वितीय परिच्छेद में अलङ्कार की परिभाषा करके 35 प्रकार के अलंकारों की गणना की गई है एवं तत्पश्चात् इन अलङ्कारों

के लक्षण एवं उदाहरण दिए गए हैं। उनके द्वारा उल्लेखित किए गए अलङ्कार निम्न हैं - उपमा, रूपक, स्वाभावोक्ति, दीपक, अपह्नुति, आवृत्ति, अर्थान्तरन्यास, व्यतिरेक, विभावना, विशेषोक्ति, आक्षेप, समासोक्ति, अतिशयोक्ति, उत्प्रेक्षा, हेतु, सूक्ष्म, लेश, यथासंख्य, प्रेय, रसवत्, उर्जस्वि, पर्यायोक्त, समाहित, उदात्त, श्लेष, तुल्ययोगिता, विरोध, अप्रस्तुतप्रशंसा, व्याजोक्ति, निदर्शना, सहोक्ति, परिवृत्ति, आशीः, संकीर्ण, भाविक।

तृतीय परिच्छेद - इस परिच्छेद में यमक अलंकार गोभूत्रिका, अर्धभ्रम, सर्वतोभद्र, स्वस्थानवर्णनियम आदि चित्रबन्ध अलङ्कारों के लक्षण एवं उदाहरण का वर्णन है। 29 श्लोकों में प्रहेलिका तथा 63 श्लोकों में दोष-वर्णन है।

2.4.4 शैली

काव्यादर्श की शैली सरल तथा सारगर्भित है। उन्होंने काव्यादर्श में जो उदाहरण दिए हैं उसमें अधिकांश स्वरचित हैं। काव्यादर्श के पदों में लालित्य सर्वत्र दृष्टिगत होता है। दण्डी ने काव्यादर्श में जिन प्रसाद, माधुर्य, सौकुमार्य, अर्थव्यक्ति, कान्ति आदि गुणों का उल्लेख किया वे सभी उनकी रचना में दृष्टिगत है। गुण एवं अलंका का विशद् विवेचन किया है और अलंकारों के विस्तार से वर्णन के कारण दण्डी को अलङ्कारवादी आचार्य कहा जाता है।

गद्य-साहित्य में पदलालित्य दण्डी की सबसे बड़ी विशेषता मानी जाती है। दण्डी का भाषा-शैली पर असामान्य अधिकार है। दशकुमारचरित के विषय तथा अभिव्यञ्जना के निर्वाह में जो सन्तुलन है, वह अन्यत्र दुर्लभ है। दण्डी की भाषा सरल है। वैदर्भी शैली में इस ग्रन्थ की रचना हुई है न तो यहाँ श्लेष का प्राचुर्य है और न ही कादम्बरी के समान समासबन्ध। अलङ्कारों के सीमित प्रयोग ने ग्रन्थ को प्राञ्जल बना दिया है। पदलालित्य के लोभवश यत्र-तत्र अनुप्रास का प्रयोग मिलता है तथापि अनुप्रास का प्रयोग अस्वाभाविक नहीं लगता -

सैषा में प्राणसमा यद् विरहो दहन इव दहति माम्।
इदं च मे जीवितमपहरता राजपुत्रेण मृत्युनेव निरुष्मतां नीतः।
निष्प्रतिक्रिया प्राणान्। **(उत्तरपीठिका षष्ठ उल्लास)**

दण्डी का इस प्रकार का वर्णन ओजोगुणगर्भित होने पर भी ललित प्रतीत होता है। दण्डी के ग्रन्थ में श्रृंगार वीर, हास्य, वीभत्स, शान्तादि रसों का समायोजन हुआ है। "दण्डिनः पदलालित्यम्" यह युक्ति जो दण्डी के लिए कही गई है वह उनके द्वारा पद-प्रयोग में लालित्य के लिए प्रसिद्ध है। दशकुमारचित के अनुशीलन करने पर पद-पद पर यह युक्ति अक्षरतः सिद्ध होती है। न तो उनके काव्य में सुबन्धु जैसी प्रत्यक्षश्लेषमयता है और न ही बाणभट्ट जैसी समासबन्धता। अतः दण्डी के महत्त्व का आकलन इस पंक्ति से की जा सकती है - **कविर्दण्डी कविर्दण्डी कविर्दण्डी न संशयः।**

2.5 अम्बिकादत्त व्यास

2.5.1 जीवनवृत्त

संस्कृत साहित्य में गद्य-काव्य की रचना अत्यन्त प्राचीनकाल से होती आ रही है। परन्तु यवन तथा आंग्ल शासकों के शासनकाल में गद्य-साहित्य की रचना के प्रवाह शिथिल पड़ गए। बावजूद इसके पं. अम्बिकादत्त व्यास, पण्डित हृषीकेश भट्टाचार्य, पण्डिताक्षमाराव आदि ऐसे कई गद्यकार हुए जिन्होंने गद्य साहित्य के प्रवाह को रुकने नहीं दिया। संस्कृतभाषा के आधुनिक गद्यकारों में अम्बिकादत्त व्यास का नाम अग्रगण्य है। इनके साहित्य में प्राचीनता एवं नवीनता दोनों का समन्वय है। अम्बिकादत्त व्यास अपनी रचना 'शिवराजविजय' के कारण ख्याति प्राप्त है। यह एक आधुनिक गद्यकाव्य है, जो महान देशभक्त महाराज शिवाजी के जीवन की प्रमुख घटनाओं पर आधारित उपन्यासशैली में लिखी गई रचना है।

2.5.2 समय

अम्बिकादत्त व्यास का जन्म जयपुर नगर में हुआ था। इनके पूर्वज भी जयपुर शहर के निवासी थे। अम्बिकादत्त का जन्म जयपुर में चैत्र शुक्ल अष्टमी विक्रम संवत् 1915 को हुआ था। इनका समय 1858-1900 ई. तक है। यद्यपि इनका जन्म जयपुर में हुआ था परन्तु इनका कार्यस्थल बिहार था। आधुनिक लेखक होने तथा सरकारी सेवा में रहने के कारण इनके जीवन से सम्बन्धित बहुत सी जानकारी प्राप्त होती है।

अम्बिकादत्त व्यास जी ने स्वयं 'बिहारी-बिहार' की भूमिका में अपने पूर्वजों एवं अपने विषय में पर्याप्त सूचना दी है। इनके पिता का नाम दुर्गादत्त व्यास एवं पितामह का नाम पं. राजारामजी व्यास था। अम्बिकादत्त व्यास जी ने काशी में अपने पितामह से व्याकरणशास्त्र, काव्यशास्त्र, न्यायशास्त्र, आयुर्वेद आदि विषयों में शिक्षा प्राप्त की। पं. अम्बिकादत्त व्यास हिन्दी के प्रसिद्ध रचनाकार भारतेन्दु के समकालिक थे। वे बाल्यकाल से ही प्रतिभा सम्पन्न थे। उन्होंने बहुत छोटी उम्र से ही काव्यरचना करना प्रारम्भ कर दिया था। एक घटी में शत श्लोकों की रचना करने के कारण इन्हें विद्वद्जन ने 'घटिकाशतक' की उपाधि से विभूषित किया था। व्यास जी ने बिहार के विभिन्न राजकीय विद्यालयों में शिक्षण कार्य किया। अन्तिम समय में एक-दो वर्ष वे पटना कॉलेज में भी अध्यापक रहे। व्यास जी का बहुत ही कम उम्र में देहावसान हो गया। इनकी मृत्यु 15 नवम्बर 1900 ई. में हो गई।

2.5.3 रचनाएँ

पण्डितपछार के नाम से प्रसिद्ध अम्बिकादत्त व्यास जी संस्कृत भाषा की सेवा करते हुए लगभग 80 रचनाओं का प्रणयन किया। शिवराजविजय, सामवत्त, गुप्ता शुद्धि प्रदर्शन, अबोध निवारण, द्रव्यस्तोत्र, गद्यकाव्यमीमांसा आदि प्रमुख हैं।

शिवराजविजय - अम्बिकादत्त व्यास शिवराजविजय को ऐतिहासिक उपन्यास मानते हैं। उपन्यास शब्द आंग्लभाषा Novel का रूपान्तर है। उपन्यास की विशेषता उसकी गद्यात्मकता होती है। आधुनिक युग में गद्य की कई नई विधाएं जैसे निबन्ध, जीवनवृत्त आदि की तरह उपन्यास भी एक नई विधा थी जिसमें व्यास जी ने शिवराजविजय की रचना की। उपन्यास वस्तुतः गद्यकाव्य होते हुए भी प्राचीन गद्य काव्य से थोड़ा भिन्न होता है। इसमें एक श्रृंखलाबद्ध कथानक में जनमानस की अनुभूतियों एवं जीवनवृत्त वर्णित होता है। इसमें जनमानस के जीवन से परस्पर सम्बद्ध चित्रों एवं कार्यों का वर्णन होता है। चूंकि अम्बिकादत्त व्यास जी जनसामान्य के अधिक निकट थे इसलिए वे उनके दुःख, पीड़ा, उद्वेलन, आकांक्षा आदि को भली भांति अनुभव कर सकते थे और उन्होंने अपने ग्रंथ शिवराजविजय में ऐसा किया भी। 19वीं शताब्दी के

उत्तरार्ध में भारत में जो सांस्कृतिक पुनर्जागरण हुआ, उसमें भारतीय जनता पराधीनता एवं जातीय गौरव के नाश की व्यथा से पीड़ित थी, उसी का सजीव चित्रण शिवराजविजय में प्राप्त होता है और यही उपन्यास विधा की विशेषता है। गद्यकाव्यमीमांसा में उपन्यास शब्द को स्वयं परिभाषित किया है -

गद्यैर्विद्योतितं यत् स्याद् गद्यकाव्यं तदीरितम्।
ठान्थरूपं तदेवात्र श्रव्यं किञ्चिनरूप्यते।।
उपन्यास पदेनापि तदेव परिकथ्यते।
यथा कादम्बरी यद्वा शिवराजविजयो मम।। (गद्यमीमांसा 4-5)

शिवराजविजय तीन विराम में है और प्रत्येक विराम में चार-चार निश्वास हैं। शिवराजविजय की कथा कुछ इस प्रकार है - कथा का प्रारम्भ "धर्मरक्षा हेतु शिवाजी महाराज द्वारा स्थापित एक आश्रम से होती है। जहाँ सौवर्णी नामक विप्रकन्या के अपहरण की घटना से यह ज्ञात होता है कि सुल्तान शाइस्ताँ खान राज्य पर विजय प्राप्त करना चाहता है। अपहरणकर्त्ता को गौरसिंह जो आश्रम में ब्रह्मचारी है, मार डालता है तथा शिवाजी को सन्धि के व्याज से बन्दी बनाने की यवनों की गुप्त योजना का ज्ञान गुप्तचर के जेब से प्राप्त पत्र के माध्यम से होता है। शाइस्ताँ खान अफ़जल खान नामक अपने सेनापति को भीमा नदी के तट पर शिवाजी को छल से बन्दी बनाने के लिए भेजता है। परन्तु प्राप्त पत्र के माध्यम से शिवाजी को इस योजना की खबर हो जाती है। गौरसिंह गायक के वेश में शत्रु के मध्य जाकर सेना में भय व्याप्त कर देता है। पुनः शिवाजी के समीप आ जाता है, तब शिवाजी अफ़जल खान की हत्या की योजना बनाते हैं। जिसके लिए वे बीजापुर के सन्धि सन्देशवाहक पं. गोपीनाथ के माध्यम से प्रतापदुर्ग की तलहटी में अफ़जल खान से मिलते हैं। पूर्वयोजनानुसार शिवाजी अफजल खान का वध कर समस्त यवन सेना को पराजित कर देते हैं।" घटनाक्रम से गौरसिंह को यह ज्ञात होता है कि जिस सौवर्णी की उसने रक्षा की थी वह गौरसिंह एवं श्यामसिंह की भगिनी है। इस मुख्यकथा के साथ-साथ शिवाजी के सहायक रघुवीर सिंह एवं सौवर्णी की उपकथा भी चलती रहती है, जिसमें सौवर्णी के माता-पिता की हत्या के उपरान्त कुल पुरोहित देवशर्मा उसका लालन-पालन करते हैं। इसी सौवर्णी का रघुवीर सिंह के साथ प्रणय एवं परिणय होता

है। यहाँ कथानक में शिवाजी महाराज द्वारा यवनों के विरुद्ध किये गए अनेक संघर्षों का वर्णन किया गया है। अन्त में शिवाजी की विजय गाथा वर्णित है।

इसमें कई पात्र ऐतिहासिक हैं एवं कई कविकल्पित। शिवराज, जयसिंह, औरङ्गजेब, रोशन आरा, ऐतिहासिक पात्र हैं तो रामसिंह, गौरसिंह, क्रूरसिंह, श्यामसिंह, सौवर्णी, ब्रह्मचारी आदि कल्पित पात्र हैं। उपन्यास के कथानक का आधार मराठा साम्राज्य है। कवि की कल्पना ने ऐतिहासिक तथ्यों का विनाश नहीं किया है बल्कि उसकी रक्षा की है। शिवाजी के उत्तरोत्तर यवनों पर विजय की गाथा वर्णित है। उपन्यास में सभी पात्र सजीव प्रतीत होते हैं चाहे वे ऐतिहासिक हों या काल्पनिक। इसका अङ्गीरस वीर है - "महाराष्ट्रैः 'हर हर महादेव' इति यवनैश्च 'अल्ला अल्ला' इति युद्धारम्भसूचको महानिनदोऽक्रियत्। तस्मिन् घोरेऽन्धकारे दीपप्रकाशसाक्षिकं कुट्टिमेऽट्टे प्राङ्गणे च खड्गखणत्कारक्ष्वेडाहुङ्कार ध्वनि प्रतिध्वनि घर्षितप्रतिवेशिनिचयं मुहूर्तं यावत्तुमुलं युद्धमभूत्।" वीर के अतिरिक्त श्रृंगार-हास्य, आदि रसों का भी समावेश किया गया है। प्रकृति चित्रण अपूर्व है। सन्ध्या, रात्रि, सूर्योदय, सूर्यास्त, वन, नदी, पर्वत, ऋतु आदि का मनोहर वर्णन किया गया है।

2.5.4 शैली

कल्पना, भाषा एवं भावों की दृष्टि से "शिवराजविजय" उत्तम उपन्यास काव्य है। अलंकारों का सम्यक् एवं उत्कृष्ट प्रयोग, संवाद की सौष्ठवता, संवादों में औचित्य नीति का परिपाक सर्वत्र दृष्टिगोचर है। व्यास जी ने समाज का व्यापक चित्र उकेरा है। हिन्दु एवं यवनों के धार्मिक विश्वास, रहन-सहन, भोजन, वस्त्र, राजदरबार, विवाह, शिक्षा आदिका जीता-जागता चित्र प्रस्तुत कर दिया है। भारतरत्न डॉ. भगवानदास ने शिवराजविजय की प्रशंसा के बड़े ही मोहक शब्द कहे हैं - "शिवराजविजय में भाषा उत्तमोत्तम, ओजस्वी, अर्थपूर्ण, सुबोध्य, यथास्थान, यथावसर, उद्याम एवं कोमल है...।" इस ग्रन्थ का सर्वोपरिगुण यह है कि विषय ऐतिहासिक एवं अधिकांश वास्तविक है, जिन भावों का अर्वाचीन संस्कृत ग्रन्थों में सर्वथा अभाव है। इसका जितना प्रचार हो, उतना अच्छा है।

बोध/अभ्यास प्रश्न-

1. दशकुमारचरित के लेखक कौन हैं?

   (क) भास (ख) दण्डी (ग) बाणभट्ट (घ) सुबन्धु

2. महाकवि दण्डी की रचना कौन सी है?

   (क) काव्यादर्श (ख) कादम्बरी

   (ग) शिवराजविजय (घ) मेघदूत

3. दशकुमारचरित में कितने उच्छ्वास हैं?

   (क) चार (ख) पाँच (ग) छह (घ) आठ

4. दण्डी प्रसिद्ध हैं -

   (क) उपमा (ख) अर्थगौरव (ग) पदलालित्य (घ) छन्द

5. राजहंस किस देश का राजा था?

   (क) पुष्पपुरी (ख) मगध (ग) अवध (घ) राजगृह

6. बाणभट्ट किसकी सभा के शिरोमणि थे?

   (क) हर्षवर्द्धन (ख) राजवर्धन (ग) समुद्रगुप्त (घ) शशाङ्क

7. हर्षचरित का नायक कौन है?

   (क) हर्षवर्धन (ख) राजवंश (ग) समुद्रगुप्त (घ) शशांक

8. हर्षचरित क्या है?

   (क) कथा (ख) आख्यायिका

   (ग) नाटक (घ) गीतिकाव्य

9. चाण्डाल कन्या नामक पात्र किस ग्रन्थ में है?

   (क) हर्षचरित (ख) कादम्बरी

   (ग) काव्यादर्श (घ) दशकुमारचरित

10. राजश्री का भाई कौन है?

    (क) हर्षवर्धन (ख) ग्रहवर्मा

    (ग) स्कन्दगुप्त (घ) भैरवाचार्य

11. राजश्री का विवाह किसके साथ हुआ था?

    (क) हर्षवर्धन (ख) राजवर्मन

(ग) राज्यवर्धन (घ) स्कन्दगुप्त

12. हर्षचरित में कितने उच्छ्वास हैं?

(क) षट् (ख) सप्त (ग) अष्ट (घ) नव

13. किस उच्छ्वास में विश्रुतचरित का वर्णन है?

(क) पञ्चम (ख) षष्ठ (ग) सप्त (घ) अष्ट

14. दशकुमारचरित का मुख्य रस क्या है?

(क) शृङ्गार (ख) करुण (ग) हास्य (घ) अद्भूत

15. शुक पूर्वजन्म में कौन था?

(क) पुण्डरीक (ख) चन्द्रापीड

(ग) शूद्रक (घ) महाश्वेता

16. कादम्बरी का मुख्य रस क्या है?

(क) वीर (ख) शृङ्गार (ग) वीभत्स (घ) अद्भूत

2.6 सारांश

संस्कृत साहित्य में गद्य-साहित्य का महत्त्वपूर्ण स्थान है। वैदिक साहित्य में इसका प्रथम स्वरूप दिखाई देता है। यजुर्वेद गद्य एवं पद्य दोनों विधा में लिखी गई है। अथर्ववेद एवं ब्राह्मणग्रन्थ में भी गद्य के अंश प्राप्त होते हैं। वैदिक युग से मध्ययुग के विकास तक की यात्रा में गद्य के भी विकास की रोचक गाथा है। गद्य में पद्य को दर्शन के दुरुह शब्दों को व्याख्यायित करने की दक्षता होती है। छन्दबद्ध होने से साहित्यकारों के मध्य पद्य ज्यादा प्रसिद्ध रहे फिर भी कई ऐसे ग्रन्थ हैं जो गद्य में उपनिबद्ध हैं और उनको भी पद्यसदृश ही सम्मान प्राप्त है, जिसमें सुबन्धु बाणभट्ट, दण्डी, अम्बिकादत्तव्यासादि का नाम प्रमुखता से लिया जा सकता है। गद्य की एक मुख्य विशेषता होती है लघुता एवं समासबद्धता। समास बहुत शब्द कम शब्दों में भी अधिकाधिक अर्थ प्रदान करने की क्षमता रखता है।

सुबन्धु की वासवदत्ता, बाणभट्ट की कादम्बरी, दण्डी का दशकुमारचरित, अम्बिकादत्त व्यास की शिवराजविजय यह गद्यकाव्य की विशिष्टता को धारण करने के कारण अद्वितीय ग्रन्थ है। सुबन्धु

प्रत्यक्षर श्लेषमय रचना, बाण की भाषा शैली, दण्डी का पदलालित्य इनको एवं इनके ग्रन्थों को सदा-सदा के लिए अमर कर गया है। दण्डी विरचित 'काव्यादर्श' अलंकारशास्त्र का एक मानित ग्रन्थ है। अम्बिकादत्त व्यास गद्य की नई विधा उपन्यास के जनक माने जाते हैं। ये गद्य की आधुनिक परम्परा के आधार स्तम्भ माने जाते हैं। शिवराजविजय के अवलोकन से यह पता चलता है कि सुबन्धु बाणादि ने गद्य की जिस परम्परा का शुभारम्भ किया था उसे आगे बढ़ाने का काम अम्बिकादत्त व्यास जी ने पूरी तन्मयता से किया है।

2.7 शब्दावली

छन्द - मात्रा की गणनाबद्ध पद्य रचना

वाङ्मय - साहित्य

प्रणय-कथा - प्रेम कथा

प्राचुर्य - बहुतायत, अत्यधिक का भाव

गौडी - लम्बे समासयुक्त पद एवं कठोर वर्ण की बहुतायतता युक्त काव्यशैली

प्रवीण - निपुण

आख्यायिका - संस्कृत की गद्यबद्ध रचना, जो उच्छ्वासों में उपनिबद्ध हो

पाञ्चाली - एक प्रकार की काव्यशैली, जिसमें छोटे-छोटे समास होते हैं

सौष्ठव - सुन्दरता, उपयुक्तता, परमकौशल, लाघव

2.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

- संस्कृत साहित्य का इतिहास, डॉ. उमा शंकर शर्मा ऋषि, चौखंबा भारती अकादमी, 2004
- संस्कृत साहित्य का इतिहास वाचस्पति गैरोला, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 2009
- संस्कृत साहित्य का इतिहास, आचार्य बलदेव उपाध्याय, शारदा निकेतन, कस्तूरबा नगर, सिगरा, वाराणसी 2001
- संस्कृत साहित्य का समग्र इतिहास, प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी, न्यू

भारतीय बुक कार्पोरेशन, नई दिल्ली, 2018

- संस्कृतरचना – श्री वामन शिवराम आप्टे - चौखम्बा विद्याभवन वाराणसी

2.9 बोध/अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1. दण्डी
2. काव्यादर्श
3. आठ
4. पदलालित्य
5. अवध
6. हर्षवर्धन
7. हर्षवर्धन
8. आख्यायिका
9. कादम्बरी
10. हर्षवर्धन
11. राजवर्मन
12. अष्ट
13. अष्ट
14. श्रृंगार
15. पुण्डरीक
16. श्रृंगार